आज कि अव्यक्त मुरली का सहज सार ---------- Date:24-08-14

हम सब ब्राह्मण आत्माओं का इस पुरुषोत्तम संगमयुगी अव्यक्त ब्राह्मण जीवन का लक्ष्य है - ब्रह्मा बाप समान संपूर्ण कर्मातित अवस्था को प्राप्त करना.

बापदादा ने हम बच्चों को ब्रह्मा बाप समान संपूर्ण कर्मातित बनने के लिए, हमारी आत्मा का अन्तिम स्टेज कैसा हो, उसे समझाते हुए कहा, जैसे आदि स्थिति साकार स्वरूप में सहज ही स्थित रहते हो (हम लास्ट ५००० साल से, 83 जन्मो से इस स्थिति में रहे है), ऐसे अनादि निराकारी (परमधाम में बाबा के साथ, बिजरुप अवस्था) स्थिति इतनी ही सहज अनुभव होनी चाहिए.

कैसे हम यह अवस्था को प्राप्त कर सकते है?

इस ब्राह्मण जीवन में रहते जब चाहे तब अनादि स्थिति में स्थित हो जाये, उसके लिए बाबा को हमारे दिल में बैठाना पड़ेगा. हमारे पास अभी जीतना भी टाइम है, बाबा को सदा साथ रखना पड़ेगा. हमारे सामने साकार रुप में गुलजार दादी है, जिसको देखने से या साथ रहने से ही बाबा का संग का अनुभव होता है वैसे हमें अपनी स्थिति बनानी पड़ेगी.

बाबा की याद और साथ सदा रहे और जब चाहे तब अनादि अवस्था में स्थित हो जाये, इसलिए नीचे बताई ड्रिल बार-बार करें.

सिमरन करें -- "बाबा मेरे साथ है, बाबा मेरे पास है."

फील करें -

बाबा मेरे साथ है यानी अभी बाबा मेरे साथ चल रहे है, में जो भी संकल्प - कर्म करता हूँ उसमें बाबा मेरे साथ है.

बाबा मेरे पास है यानी परमधाम में बाबा मेरे पास हैं. यह अनादि अवस्था है तो इस अवस्था में हमारे संकल्प सब मर्ज हो जाने चाहिए.

एक सेकेण्ड यहॉ बाबा के साथ का अनुभव करें, दूसरी सेकेण्ड परमधाम में, बिजरूप अवस्था में बाबा के पास का अनुभव करें. दिन भर में इसकी प्रैक्टिस बार-बार करें.

बापदादा ने हमें साकारी ब्राह्मण जीवन में ब्रह्मा बाप के दो गुणों को हमारे में धारण करने को भी कहा.

- पर-उपकारी जीवन ----- इस का मतलब तो बहुत साफ है कि जैसे आम का पेड़ है और बच्चे उस पर लगे आम को तोड़ने के लिए उस पर पत्थर फेंकते है फिर भी वह आम का पेड़, खुद पत्थर खाने के बाद भी बच्चे को मीठा आम देता है. वैसे हमारे ब्राह्मण जीवन में हमें किसी से कोई शिकवा-गिला न हो. कोई हमें दुख भी देता हो लेकिन हमें उस पर भी रहम कि दृष्टि रखनी है और उसका भी भला करना है.

- बाल ब्रह्मचारी या सदा ब्रह्मचारी जीवन ---- सदा ब्रह्मचारी अर्थात संकल्प में भी किसी प्रकार कि अपवित्रता वृति को चंचल न बनाये. पहेली हार वृति कि चंचलता, फिर दृष्टि और कृति कि चंचलता होती है. वृति कि चंचलता भी रजिस्टर को दाग़ी बना देती है इसलिए वृति से भी सदा ब्रह्मचारी.

ॐ शांति.